Dr Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG SEMESTER - V
MJC - 09: Social and Cultural Philosophy

"Concept of Culture"
(संस्कृति की अवधारणा)

'संस्कृति' शब्द 'संस्कार' से बना है जिसका अर्थ है परिष्करण या सुधरी हुई स्थिति।

रैल्फ लिंटन के अनुसार - संस्कृति (culture) किसी समाज के सदस्यों की जीवन-शैली है। यह उन विचारों और आदतों की समष्टि है, जिन्हें वे सीखते हैं जो साझा होती है, और जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जाता है। "संस्कृति" के इस व्यापक अर्थ के अन्तर्गत विश्वास, मूल्य, प्रतिमान, प्रचलन, खान-पान, वेश-भूषा, भाषा, साहित्य, कला और संगीत आदि सभी शामिल हैं। इसतरह, संस्कृति के दो अनिवार्य तत्व हैं: एक, वह सीखी जाती है, दो वह साझा होती है। एक साझा संस्कृति के कारण ही किसी समाज के सदस्य आपस में सम्प्रेषण और सहयोग कर पाते हैं। समाज में विभिन्न परिस्थितियों में किस तरह आचरण करना है, यह संस्कृति द्वारा निर्धारित की जाती है। अलग-अलग समाजों की संस्कृति अलग-अलग होती है। किसी समाज के सदस्यों के सोचने-समझने का तरीका, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण, उनके व्यवहार करने का तरीका काफी हद तक संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है। किसी जटिल समाज में कई उपसंस्कृतियाँ (sub culture) भी होती हैं: जैसे अलग-अलग वर्गों और जातियों की। इसके अलावा, संस्कृति परिवर्तनशील भी होती है।

* संस्कृति और दर्शनशास्त्र मानव-जीवन और

संस्कृति को बेहतर बनाने में सहायक है। और इसकी वजह और जीवन का दर्शन पर और दर्शन का जीवन और संस्कृति पर गहरा असर होता है। संस्कृति, पर्यावरण का वह मानव निर्मित भाग है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करता है। संस्कृति समाज के भौतिक और मानसिक विकास का परिणाम है और यह समय के साथ बदलती रहती है।

संस्कृति को मोटे तौर पर भौतिक और अभौतिक (गैर भौतिक) संस्कृतियों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) भौतिक संस्कृति (material culture): भौतिक का अर्थ है मूर्त अथवा दृश्यनीय। इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य ने अपने अनुभवों तथा प्रयत्नों से जितने भी पदार्थों का आविष्कार अथवा निर्माण किया है, वे सभी भौतिक संस्कृति के अंग हैं। सभ्यता के आरम्भिक काल से ही मनुष्य ने अनेक भौतिक वस्तुओं का निर्माण किया। आरम्भ में यह वस्तुएं पत्थर के बर्तनों, तीरों और हथियारों के रूप में थीं जबकि आज इनकी कलात्मकता और उपयोगिता में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हो गयी है। इससे यह बात भी स्पष्ट होती है कि भौतिक संस्कृति का सम्बन्ध सभ्यता में होने वाली वृद्धि से है। जिस समाज के पास भौतिक पदार्थ जितने अधिक हैं, हम उसे उतना ही प्रगतिशील और सभ्य समाज कहते हैं।

भौतिक संस्कृति की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें सदैव ज्यामितीय दर से वृद्धि होती रहती है। इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक आनेवाली अवधि में भौतिक पदार्थों की संख्या में होनेवाली वृद्धि अपने से पहली अवधि

में भौतिक पदार्थों की संख्या में होनेवाली वृद्धि होती रहती है। आपने से पहली आवश्यक की तुलना में अधिकता होती है। इसका कारण यह है कि आरम्भ में व्यक्ति केवल अपने ही अनुभवों और प्रयत्नों से किसी वस्तु का निर्माण करता है जबकि बाद के लोग, अपने पूर्वजों के अनुभवों का भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं। भौतिक संस्कृति प्रत्येक अर्थ में वैकल्पिक होती है। भौतिक वस्तुओं की संख्या इतनी अधिक है कि व्यक्ति सभी एक साथ उपयोग नहीं कर सकता। साधारणतया व्यक्ति बहुत-सी वस्तुओं में से अपनी रुचि की वस्तुएँ चुनकर उनका उपयोग करते हैं। ऑगबर्न ने भौतिक संस्कृति में परिवर्तन के गुण पर सबसे अधिक बल दिया है। अर्थ - जैसे व्यक्तियों की कार्यों योग्यता और परिस्थितियों में परिवर्तन होता जाता है, भौतिक संस्कृति के रूप में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। यही कारण है कि परम्परागत समाजों में भी व्यक्तियों के विश्वास और विचार तो बहुत स्थिर रहते हैं लेकिन उनकी संस्कृति का भौतिक पक्ष कभी स्थिर नहीं रहता। भौतिक पदार्थ मूर्त और मापनीय होने के कारण अपेक्षाकृत सरल भी होते हैं। भौतिक संस्कृति को दूसरे समूहों द्वारा सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। जैसे हमारे विचार और विश्वास अमरीकी संस्कृति से बिल्कुल भिन्न हो सकते हैं लेकिन फिर भी हम उनकी मशीनों उपकरणों अथवा औजारों (जो भौतिक संस्कृति का अंग हैं) का उपयोग बिल्कुल उसी रूप में करते हैं। इस दृष्टिकोण से भौतिक संस्कृति के तत्व सभी संस्कृतियों को एक-दूसरे के समीप लाने का प्रयत्न करते हैं।

बीरस्टीड ने भौतिक संस्कृति के सभी तत्वों को प्रमुख 13 श्रेणियों में विभाजित

तारके द्वारा मूर्त स्वरूप को स्पष्ट किया है:
1. मशीनें (Machines) 2. उपकरण (tools),
3. बर्तन (Utensils), 4. इमारतें (buildings),
5. सड़कें (roads), 6. पुल (Bridges), 7. शिल्प वस्तुएँ (art-craft), 8. कलात्मक वस्तुएँ (objects d'art),
9. वस्त्र (clothing), 10. गाड़ियाँ (vehicles),
11. फर्नीचर (furniture), 12. खाद्य पदार्थ (food stuffs) तथा 13. औषधियाँ (Medicines)
आदि। इस वर्गीकरण द्वारा बीरस्टीड ने स्पष्ट किया है कि भौतिक संस्कृति का तात्पर्य उन सभी पदार्थों से है जिनका मनुष्य ने निर्माण किया तथा जिन्हें आवश्यकता के लिए वह अपने पास रखता है।

(2) अभौतिक संस्कृति (Non-material culture) — अभौतिक संस्कृति का तात्पर्य संस्कृति के उस पक्ष से है जिसका कोई स्थूल स्वरूप नहीं होता तथा जो विचारों और विश्वासों के माध्यम से मानव व्यवहारों को प्रभावित करता है। जैसे - अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत के द्वारा किसी समाज में जितने भी विचारों, विश्वासों, नियमों, परम्पराओं, लोकाचारों, प्रथाओं और अनुरीतियों का विकास होता है, वे सभी संस्कृति के अभौतिक तत्व हैं। स्पष्ट है कि मानव समाज को प्रभावित करने में यह अभौतिक संस्कृति भौतिक संस्कृति की अपेक्षा अधिक प्रभावपूर्ण होती है क्योंकि यदि भौतिक संस्कृति से अनुकूलन न करे तो इसका उसके सामाजिक अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन अपनी अभौतिक संस्कृति से अनुकूलन न करने पर व्यक्ति को कठोर सामाजिक तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।

यही कारण है कि अभौतिक संस्कृति की प्रकृति स्थिर होती है। व्यक्ति इसके रूप में

परिवर्तन करने का साहस बहुत कठिनता से ही कर पाते हैं। इसप्रकार, संस्कृति के इस पक्ष में बाह्यता का गुण है।

रॉबर्ट बीरस्टीड ने अभौतिक संस्कृति में विचारों और आदर्श नियमों को सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसके विवेचन से अभौतिक संस्कृति की प्रकृति को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। विचार (Ideas) अभौतिक संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। प्रत्येक संस्कृति में एक विशेष प्रकार के विचारों अथवा विश्वासों का विकास होता है तथा उस समाज के सभी सदस्यों से इनका पालन करने की इच्छा की जाती है। विचारों की कोई संख्या निर्धारित नहीं की जा सकती। इसके पश्चात भी अध्ययन की सरलता के लिए इन सभी विचारों को आठ भागों में बाँटा जा सकता है: 1. वैज्ञानिक सत्य 2. धार्मिक विश्वास, 3. पौराणिक कथाएँ 4. उपाख्यान (Legends) 5. साहित्य 6. अन्धविश्वास 7. सूत्र (Aphorisms), 8. लोकोक्तियाँ तथा लोकगाथाएँ आदि। ये सभी विचार अभौतिक संस्कृति के प्रमुख तत्व हैं।

आदर्श नियमों (Norms) का सम्बन्ध विचार करने से नहीं बल्कि हमारे व्यवहार करने के तरीकों से है। प्रत्येक समाज व्यवहार के कुछ खास नियमों का पालन करने पर जोर देता है, जिन्हें उस समाज की संस्कृति उचित समझती है। प्रत्येक समाज की संस्कृति कुछ दशाओं में एक-दूसरे से भिन्न होती है, इसलिए कि उसके आदर्श नियम एक-दूसरे से कुछ भिन्न देखने को मिलते हैं। जैसे - यदि हमें किसी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना है तो इसके लिए विभिन्न संस्कृतियों के आदर्श नियम एक-दूसरे से भिन्न हो सकते हैं। हम हाथ जोड़कर अथवा पैर छूकर यह कार्य करते हैं, पाश्चात्य संस्कृति

के नियम हाथ मिलाने अथवा हाथ उठाकर हिलाने की स्वीकृति देते हैं। फौजी और टोगा लोग किसी का सम्मान करने के लिए उसके सामने बैठ जाते हैं जबकि अफ्रीका की मसाई जनजाति में एक-दूसरे पर थूकना परस्पर सम्मान और स्नेह प्रदर्शन का नियम है। इससे स्पष्ट होता है कि हम किस प्रकार से व्यवहार करेंगे यह हमारे उन नियमों पर आधारित है जिन्हें संस्कृति अपना (आदर्श) मानती है। बीरस्टीड ने सभी प्रमुख आदर्श नियमों को 14 भागों में विभाजित किया है: 1. कानून 2. अधिनियम 3. नियमन (regulation) 5. प्रथाएँ 6. जनरीतियाँ, 7. लोकाचार, 8. निषेध (taboos) 9. फैशन, 10. संस्कार, 11. कर्मकाण्ड, 12. अनुष्ठान 13. परिपाटी (Convention) तथा 14. सदाचार।

ये सभी विचार, विश्वास तथा नियम अमूर्त हैं, इसलिए इससे बनने वाले सांस्कृतिक पक्ष को हम अभौतिक कहते हैं। सामाजिक संस्थाएँ भौतिक और अभौतिक संस्कृति के समन्वय से ही अपना कार्य करती हैं। इस दृष्टिकोण से भौतिक और अभौतिक संस्कृति को एक-दूसरे से पृथक समझ लेना गलत होगा।